B.A. I (Hon's) Paper. Ist
Topic - Vaisheshika Atomic Theory

Q: वैशेषिक के विश्व की सृष्टि एवं प्रलय सम्बन्धी सिद्धान्त अर्थात् परमाणुवाद की व्याख्या करें।

Ans: न्याय - वैशेषिक दर्शन अन्य भारतीय दर्शनों की तरह विश्व की उत्पत्ति के संबंध में सृष्टिवाद के सिद्धान्त को स्वीकार करता है। चार्वाक एवं सांख्य दर्शन को छोड़कर प्रायः भारतीय दर्शन सृष्टिवाद के सिद्धान्त को अपनाया है। परन्तु वैशेषिक दर्शन के सृष्टि सिद्धान्त की कुछ विशेषताएँ हैं, जो इसे अन्य सृष्टि सिद्धान्तों से अलग कुछ मौलिक विशिष्टताएँ हैं।

वैशेषिक दर्शन यह स्वीकार करता है कि विश्व का निर्माण परमाणुओं से हुआ है, जो संख्या में चार हैं- पृथ्वी, जल, वायु एवं अग्नि। विश्व का निर्माण इन्हीं चार प्रकार के परमाणुओं से हुआ है जिस कारण इस दर्शन के सृष्टिवादी सिद्धान्त को परमाणुवाद भी कहा गया है। परमाणु नित्य होते हैं, न तो इसकी सृष्टि होती है और न विनाश ही। निर्माण का अर्थ है विभिन्न अवयवों का एक साथ संयोजन तथा प्रलय का अर्थ है विभिन्न अवयवों का विखण्डन। चूँकि परमाणु निरवयव होते हैं, इस कारण वे उत्पत्ति एवं विनाश से परे हैं।

वैशेषिक दर्शन का परमाणुवाद विश्व के उसी भाग की व्याख्या करता है जो अनित्य है। नित्य अंश की व्याख्या इसके आधार पर नहीं होती है। दिक्, काल, आत्मा, मन तथा भौतिक परमाणुओं की न तो सृष्टि होती है और न विनाश ही। अतः परमाणुवाद इनकी व्याख्या नहीं करता है। परमाणुओं के संयोजन से वस्तुओं का निर्माण होता है तथा उनके विखण्डन से वस्तुओं का नाश होता है। परमाणु निष्क्रिय एवं गतिहीन होते हैं, अतः परमाणुओं के संयोजन एवं विखण्डन के लिए गति की आवश्यकता होती है। यह गति परमाणुओं में किसी बाह्य कारण से आती है। प्राचीन वैशेषिकों के मत में परमाणुओं में यह गति अदृष्ट के द्वारा उत्पन्न होता है, परन्तु परवर्ती वैशेषिकों ने परमाणुओं में इस गति का कारण ईश्वर को माना है। ईश्वर की इच्छा से ही सृष्टि एवं प्रलय होता है। ~~किसी~~

किसी पदार्थ के निर्माण में दो प्रकार के कारणों - उपादान एवं निमित्त की आवश्यकता होती है। विश्व के उपादान कारण चार प्रकार के परमाणु हैं तथा

Scanned with CamScanner

ईश्वर निमित्त कारण है। क्योंकि ईश्वर जीवों के अदृष्ट के अनुसार कर्मफल का भोग करने के लिए परमाणुओं में क्रिया को संचालित करता है।

वैशेषिक दर्शन का मानना है कि दो परमाणुओं के संयोजन से द्वयणुक का निर्माण होता है। तीन परमाणुओं के संयोजन से त्र्यणुक का, चार परमाणुओं के संयोजन से चतुर्णुक का निर्माण होता है। इस चतुर्णुक के संयोजन से छोटे एवं बड़े द्रव्यों का निर्माण होता है। स्थूल पृथ्वी, वायु, अग्नि एवं जल इन्हीं संयोजनों का परिणाम है।

अब प्रश्न उठता है कि यदि सृष्टि का निर्माण परमाणुओं के द्वारा होता है, फिर भी विश्व में क्रम एवं व्यवस्था का कारण क्या है। वैशेषिक दर्शन आध्यात्मिक दृष्टिकोण के द्वारा व्यवस्था की व्याख्या की है। विश्व में विद्यमान व्यवस्था का कारण जीवात्माओं का पूर्व कर्म है। ईश्वर सृष्टि का निर्माण अदृष्ट नियम से प्रभावित होकर करता है। जीवात्मा अपने ज्ञान एवं कर्म के अनुरूप ही सुख एवं दुःख भोगता है। जीवात्मा के सुख-दुःख का कारण भौतिक नियम नहीं बल्कि कर्म नियम है। सृष्टि के लिए ईश्वर, परमाणु, जीवात्मा एवं कर्म नियम अपेक्षित है। ईश्वर एवं आत्मा आध्यात्मिक है। इसलिए वैशेषिक का परमाणुवाद भौतिकवादी नहीं है।

वैशेषिक दर्शन का मानना है कि सृष्टि अनन्त काल तक स्थिर नहीं रह सकती है। सृष्टि के बाद प्रलय होती है। भिन्न - भिन्न योनियों में सुख एवं दुःख की अनुभूति प्राप्त करने के बाद जीवों को विश्राम की आवश्यकता होती है, उसे ही प्रलय कहते हैं। दो प्रलय के बाद जो सृष्टि होती है उसे कल्प कहते हैं। एक कल्प के बाद दूसरे कल्प की उत्पत्ति होती है तथा यह प्रक्रिया अनवरत जारी रहती है।

वैशेषिक दर्शन का परमाणुवाद ग्रीक परमाणुवाद से एकदम भिन्न है। डैमोक्रिटस एवं ल्युसिपस ने परमाणुओं को गुणरहित स्वीकार किया है जिसमें केवल परिमाण होता है जबकि वैशेषिक दर्शन के अनुसार परमाणुओं में गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दोनों भेद होते हैं। परमाणु गुणयुक्त होते हैं तथा वैशेषिक परमाणुओं में जिन गुणों को

स्वीकार करता है, वे हैं :

वायु - स्पर्श, अग्नि - रूप एवं स्पर्श, जल - रूप, रस एवं स्पर्श पृथ्वी - गन्ध, रंग, रस, एवं स्पर्श। ग्रीक परमाणुवाद के मत में परमाणु स्वभावतः सक्रिय एवं गतिशील होते हैं। जबकि वैशेषिक के अनुसार परमाणु स्वभावतः निष्क्रिय एवं गतिहीन होते हैं तथा गति का संचालन ईश्वर के द्वारा होता है। ग्रीक दार्शनिकों ने कहा है कि विश्व का निर्माण केवल परमाणुओं के संयोग से होता है जिनकी व्याख्या भौतिक नियमों के आधार पर ही की जा सकती है। दूसरी ओर वैशेषिक दर्शन सृष्टि के लिए परमाणुओं के साथ - साथ नैतिक नियम को भी स्वीकार करता है। पाश्चात्य परमाणुवादी भौतिकवाद एवं यन्त्रवाद के आधार पर विश्व की व्याख्या करता है जबकि वैशेषिक इसकी व्याख्या आध्यात्मवाद एवं नैतिक नियम से करता है।

Criticism : यद्यपि वैशेषिक दर्शन सृष्टि एवं प्रलय के संबंध में परमाणुवाद को स्वीकार करता है तथापि इसके परमाणुवाद की प्रखर आलोचनाएँ भी हुई हैं :

i) यह दर्शन स्वीकार करता है कि विश्व का निर्माण अचेतन परमाणुओं से होता है। यदि परमाणु अचेतन हैं तब किस प्रकार विश्व का निर्माण व्यवस्थित रूप में हो पाता है। इस कठिनाई से बचने के लिए यह दर्शन अदृष्ट को आधार बनाता है जो कि स्वयं अचेतन है।

ii) वैशेषिक दर्शन परमाणुओं में गुणात्मक भेद स्वीकार करता है। यदि उनमें गुणात्मक भेद हैं तो परिमाणात्मक भेद भी होना चाहिए।

iii) वैशेषिक दर्शन परमाणुओं को गतिहीन मानता है। यदि परमाणु गतिहीन हैं, निष्क्रिय हैं तो सृष्टि की संभावना समाप्त हो जाती है। पुनः यदि परमाणुओं में गति का कारण ईश्वर को माना जाए तब ऐसी स्थिति में सृष्टि, नित्य, एवं स्थायी होगी। परमाणुओं को सक्रिय एवं निष्क्रिय दोनों नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि दोनों परस्पर विरोधी हैं। यदि परमाणुओं को न सक्रिय एवं न ही निष्क्रिय माने तब यह सृष्टि की व्याख्या करने में असमर्थ होगी।

iv) आलोचकों का कहना है कि वैशेषिक परमाणुओं को नित्य मानता है। यदि परमाणु गुणयुक्त हैं तो नित्य नहीं हो सकते।

Scanned with CamScanner